अमेरिकी कंपनियों की मदद से इंटरनेट की दुनिया में

हिंदी को नया जीवन

गिरिराज अग्रवाल

कुछ साल पहले तक माना जाता था कि इंटरनेट के लिहाज से हिंदी का कोई भविष्य नहीं है। लेकिन माइक्रोसॉफ़्ट, याहू, गूगल और विकिपीडिया जैसी अमेरिकी कंपनियों के प्रयासों से अब इंटरनेट पर हिंदी नए सिरे से अपना स्थान बनाकर करोड़ों लोगों तक अपनी पहुंच बना रही है।

उत्तर प्रदेश के एक सरकारी स्कूल में अध्यापक के रूप में कार्यरत गाज़ियाबाद के 55 वर्षीय रामप्रकाश त्यागी के घर के सामने तीन साल पहले जब ब्रॉडबैंड इंटरनेट केबल बिछाने के लिए खुदाई की जा रही थी तो वह बहुत गुस्से में थे। वह नहीं चाहते थे कि उनके घर के सामने खुदाई हो क्योंकि उनकी नज़र में यह हाई फाई तकनीक सिर्फ अंग्रेजी जानने वाले ऊपरी तबके के लिए ही उपयोगी थी। फ़रीदाबाद में रहने वाली कुसुम गुप्ता के मन में भी एक साल पहले कुछ इसी तरह के विचार चल रहे थे जब अमेरिका में रहने वाले उनके बेटे ने उन्हें अपनी भारत यात्रा के दौरान एक कंप्यूटर और ब्रॉडबैंड कनेक्शन लेकर दिया। लेकिन त्यागी और गुप्ता, दोनों के ही विचार अब बदल चुके हैं। अब जब उनका ब्रॉडबैंड इंटरनेट कनेक्शन काम नहीं करता तो वे सेवा देने वाली कंपनी से नाराज़ हो जाते हैं। इंटरनेट पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की प्रगति के कारण ऐसे करोड़ों लोग इंटरनेट को अपनी ज़िंदगी में उपयोगी पा रहे हैं जिन्हें अंग्रेजी नहीं आती। ये लोग ई-मेल का आदान-प्रदान कर रहे हैं, ई-अखबार पढ़ रहे हैं, ब्लॉग लिख रहे हैं और वेबसाइट शुरू कर रहे हैं, और ये सब काम वे उस भाषा में कर रहे हैं जो उनके जीवन में रची-बसी है। दो अमेरिकी कंपनियों माइक्रोसॉफ़्ट और गूगल ने इस काम को संभव बनाने में बड़ी भूमिका अदा की है।

एक दशक पहले तक ऐसा बड़े पैमाने पर माना जाता था कि हिंदी इंटरनेट के लिए सही भाषा नहीं है। प्रभासाक्षी डॉट कॉम के संपादक और वर्ष 2007 में माइक्रोसॉफ़्ट मोस्ट वेल्यूबल प्रोफेशनल पुरस्कार जीतने वाले भारतीयों में से एक बालेंदु शर्मा कहते हैं, ''हिंदी फांटों और कीबोर्ड लेआउट के इस्तेमाल में अराजकता थी जिसके कारण उस हर दस्तावेज को पढ़ना समस्या थी जिसमें इस्तेमाल हुआ फांट पाठक के पास नहीं होता था। लगभग 50 फांट और 20 से ज़्यादा कीबोर्ड शैली इस्तेमाल में लाई जा रही थी और यदि दो लोग अलग-अलग फांट और शैली अपना रहे थे तो उनके लिए एक-दूसरे के दस्तावेजों को पढ़ना संभव नहीं था।'' लेकिन हिंदी में यूनीकोड फांट के आने से स्थिति बदल गई। कैलिफ़ोर्निया में पंजीकृत गैरसरकारी संगठन यूनीकोड कन्शॉर्शियम द्वारा विकसित यह नई एनकोडिंग प्रणाली भारतीय भाषाओं के लिए वरदान साबित हुई। यूनीकोड कन्शार्शियम के सदस्यों में अन्य के अलावा गूगल, आईबीएम, ओरेकल, माइक्रोसॉफ़्ट, सन माइक्रोसिस्टम, याहू और भारत सरकार भी शामिल है। माइक्रोसॉफ़्ट ने वर्ष 2001 में हिंदी यूनीकोड फांट मंगल को अपने ऑपरेटिंग सिस्टम में शामिल कर लिया। माइक्रोसॉफ़्ट इंडिया के प्रॉडक्ट एवं विजन मैनेजर मेघश्याम कर्णम कहते हैं, ''तब से माइक्रोसॉफ़्ट अपने हर अगले संशोधित ऑपरेटिंग सिस्टम में हिंदी यूनीकोड फांट उपलब्ध करा रहा है। यही नहीं विभिन्न कीबोर्ड के इस्तेमाल की सुविधा के लिए इनपुट मेथड फेसिलिटीज यानी पाठ्य सामग्री लिखने की नई सुविधाएं भी मुहैया कराई गईं।'' हिंदी के संपादक इसे माइक्रोसॉफ़्ट का ''बड़ा उपहार'' मानते हैं। नवभारत टाइम्स डॉट कॉम के वरिष्ठ संपादक नीरेन्द्र नागर कहते हैं, ''यूनीकोड फांट का आगमन हिंदी वालों के लिए एक बड़ी पहल था जिसने इंटरनेट पर हिंदी को बेहद बढ़ावा दिया। इससे हर किसी को हिंदी दस्तावेजों तक पहुंचने की आज़ादी हासिल हो गई।'' पूर्ववर्ती एनकोडिंग प्रणाली अंग्रेजी के लिहाज से तो ठीक थी

गुरविंदर अमान © ए. पी. - डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

माइक्रोसॉफ़्ट ने अपने एमएस ऑफ़िस साफ़्टवेयर का फ़रवरी 2004 में हिंदी संस्करण जारी किया। इस अवसर पर नए उत्पाद के प्रचार के लिए सजाए गए ऑटोरिक्शा के साथ माइक्रोसॉफ़्ट इंडिया के तत्कालीन प्रबंध निदेशक राजीव कौल और प्रोग्राम मैनेजर (लोकलाइज़ेशन) रवीश गुप्ता। कंपनी ने बाद में लगातार एक के बाद एक कई नई हिंदी सेवाएं शुरू की हैं।

जागरण-याहू, विकिपीडिया और गूगल हिंदी सर्च के वेब पृष्ठ: इंटरनेट पर उपलब्ध हिंदी सामग्री में लगातार हो रहा है इज़ाफ़ा।

लेकिन हिंदी के लिए यह पूरी तरह खरी नहीं थी। पहले वाली प्रणाली में सिर्फ 127 करेक्टर ही उपलब्ध थे जबकि नई प्रणाली में 65,000 हजार करेक्टर उपलब्ध हैं। भारत में चूंकि ज़्यादातर कंप्यूटरों में ऑपरेटिंग सिस्टम माइक्रोसॉफ़्ट के हैं, इसलिए उनके अपग्रेड होने के साथ ही यूनीकोड फांट भी स्वत: ही अधिसंख्य लोगों तक पहुंच गया।

यूनीकोड सुविधा हिंदी जगत तक पहुंचाने के बाद माइक्रोसॉफ़्ट ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वर्ष 2004 में माइक्रोसॉफ़्ट ऑफ़िस का हिंदी संस्करण जारी किया गया जिसमें माइक्रोसॉफ्ट वर्ड से लेकर माइक्रोसॉफ़्ट आउटलुक तक शामिल थे। कर्णम कहते हैं, ''हिंदी में काम करने को बढ़ावा देने के लिए उसी साल प्रोजेक्ट भाषा शुरू हुआ जिससे हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को और समर्थन मिला। हाल ही में विंडोज 2007 का भी हिंदी संस्करण जारी किया गया है।'' माइक्रोसॉफ़्ट ने भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में अपनी पैठ मजबूत करने के लिए हिंदी के शुरुआती पोर्टल वेबदुनिया डॉट कॉम से भी नाता जोड़ा और वेबदुनिया के साथ मिलकर अपना हिंदी पोर्टल शुरू किया। वेबदुनिया के कंटेंट एवं लोकलाइजेशन के महाप्रबंधक जयदीप कार्णिक कहते हैं, ''वेबदुनिया ने माइक्रोसॉफ़्ट ऑफ़िस 2003 के हिंदी संस्करण और भारतीय भाषाओं के इंटरफेस पैक विकसित करने में भी मदद की। इंदौर की इस कंपनी का कार्यालय अमेरिका में भी है जहां प्रमुख सॉफ़्टवेयर डवलेपर को लोकलाइजेशन सेवाएं मुहैया कराई गई।

यदि माइक्रोसॉफ़्ट ने हिंदी के लिए आधार बनाने का काम किया तो गूगल ने उसका इस्तेमाल कर इंटरनेट पर हिंदी का भव्य महल बनाने की पहल की। हिंदी की क्षमता को भांपकर गूगल ने पिछले दो साल में हिंदी वालों के लिए इंटरनेट पर कई तरह की सेवाएं प्रस्तुत की हैं। गूगल हिंदी सर्च इंजन की मदद से कोई भी व्यक्ति इंटरनेट पर मौजूद सभी हिंदी वेब पृष्ठों को देख सकता है, भले ही वे यूनीकोड में न हों। गूगल इंडिया के प्रोडक्ट मैनेजर राहुल रायचौधरी कहते हैं, ''इंटरनेट पर हिंदी वालों को आने वाली दिक्कतों को देखते हुए हमने अतिरिक्त विकल्प पेश किए हैं। लोग हिंदी शब्दों को रोमन लिपि में लिख सकते हैं और एक ड्रॉप डाउन मेन्यू उन्हें कुछ शब्द सुझाता है जिनमें से वांछित शब्द को चुनकर हिंदी पृष्ठों को सर्च किया जा सकता है। यानी बिना हिंदी में कुछ भी टाइप किए आप हिंदी पृष्ठ सर्च कर सकते हैं। हमने इसके अलावा अनुवाद इंजन भी उपलब्ध कराया है जो हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद कर सकता है। कई बार अनुवाद थोड़ा अजीब हो सकता है लेकिन हिंदीभाषी इसे उपयोगी पा रहे हैं। हमने सामग्री को इनपुट करने के लिए ट्रासलिट्रेशन यानी रोमन लिपि में लिखने की सुविधा उपलब्ध कराई है तो हिंदी में ज़्यादा सामग्री उपलब्ध

ज़्यादा जानकारी के लिए:

जागरण-याहू वेबसाइट
http://in.jagran.yahoo.com/
गूगल हिंदी सर्च
http://www.google.co.in/intl/hi/
माइक्रोसॉफ़्ट भाषा प्रोजेक्ट
http://www.bhashaindia.com/Community/CommunityHome.aspx
हिंदी विकिपीडिया
http://hi.wikipedia.org/wiki/

कराने के लिए अनुवाद की सुविधा।'' गूगल इंडिया ने हिंदी समाचार स्रोतों से हिंदी की खबरों को एकत्र कर उन्हें गूगल न्यूज हिंदी के जरिये पाठकों तक पहुंचाने की सेवा भी शुरू की है। यही नहीं जी-मेल में भी अब यूनीकोड का समावेश कर दिया गया है जिससे हिंदी में ई-मेल भेजना और प्राप्त करना संभव हो गया है। इसी तरह गूगल ब्लॉगिंग में भी हिंदी की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

माइक्रोसॉफ़्ट, गूगल और अन्य डवलेपर के प्रयासों के चलते इंटरनेट पर हिंदी की लोकप्रियता के सकारात्मक संकेत मिल रहे हैं। हिंदी की प्रमुख वेबसाइटों को देखे जाने वाले पृष्ठों की संख्या में इजाफा हो रहा है। हिंदी के ज़्यादातर लोकप्रिय समाचारपत्र अब इंटरनेट पर भी स्वयं को उपलब्ध करवा चुके हैं। नागर कहते हैं, ''हमारे अखबार नवभारत टाइम्स डॉट कॉम के पृष्ठों को देखने की संख्या में पिछले दिनों बेहद बढ़ोतरी हुई है और इनमें से आधे से ज़्यादा लोग गूगल के जरिये आते हैं क्योंकि इंटरनेट पर अक्सर पाठक सीधे पूरा अखबार पढ़ने के बजाय किसी खास जानकारी की तलाश में आता है।''

कर रहे थे जिनमें से लगभग 90 लाख नियमित रूप से इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले हैं। जक्स्टकंसल्ट के संस्थापकों में से एक मृत्युंजय मिश्रा कहते हैं, ''भारतीय भाषाओं के लिए इंटरनेट पर बड़ी संभावनाएं मौजूद हैं। हमारे अध्ययन में हमने पाया कि इंटरनेट पर आने वाले सिर्फ 28 फीसदी भारतीयों ने माना कि इंटरनेट पर अंग्रेजी में सामग्री देखना उनकी पहली पसंद है। लेकिन भारतीय भाषाओं में अच्छी गुणवत्ता की सामग्री न मिलने के कारण वे भारतीय भाषाओं की वेबसाइट पर नहीं गए।'' सूचना प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ भी उनसे सहमत हैं। गोपाल कृष्ण कहते हैं, ''भारत जैसे देशों में लोकलाइज़ेशन ही सफलता का मंत्र है। एक अरब से ज़्यादा आबादी वाले देश में ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंच के लिए हमें हिंदी की ओर देखना ही पड़ेगा क्योंकि अंग्रेजी जानने वाले लोगों की संख्या सिर्फ आठ करोड़ है। रायचौधरी भी उनसे सहमत हैं। ''इंटरनेट सूचनाओं का लोकतांत्रीकरण करता है। वेब के जरिये हिंदी का इस्तेमाल करने वाले सूचनाओं की खाई को पाट सकते हैं। यह उनके लिए लक्ज़री नहीं है बल्कि अपना जीवन सुधारने का ताकतवर जरिया है।''

साभार: याहू इंडिया

साभार: रॉयटर्स

ऊपर: याहू इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट गोपाल कृष्ण।
दाएं: गूगल के संस्थापक सर्जी ब्रिन और लैरी पेज़ 2004 में अपनी भारत यात्रा के दौरान बेंगलूर में।

याहू इंडिया ने भी जागरण के साथ भागीदारी कर डेढ़ साल पहले हिंदी पोर्टल की शुरुआत की है। याहू इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट गोपाल कृष्ण कहते हैं, ''जागरण के साथ भागीदारी से हमें भारत में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वालों के बीच ज़्यादा पहुंच बनाने में कामयाबी मिली है। इस सेवा के सभी पहलुओं पर गौर करें तो यह बेहद सफल है।'' याहू इंडिया की याहू मैसेंजर सेवा हिंदी सहित नौ भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। याहू इंडिया के साथ भागीदारी का हिंदी वालों को क्या लाभ मिला? जागरण के प्रबंध निदेशक और संपादक संजय गुप्ता कहते हैं, ''याहू की तकनीक और मार्केटिंग दक्षता और हमारी हिंदी कंटेंट के क्षेत्र में विशेषज्ञता जानीमानी है। इंटरनेट पर आने वाले हिंदी प्रेमियों को इसका फायदा मिलेगा। हमारे अखबार का विस्तार ही होने के बावजूद हमारा यह पोर्टल बेहद लोकप्रिय है।'' जागरण में इंटरनेट टीम के प्रमुख उपेंद्र स्वामी कहते हैं, ''याहू-जागरण की भागीदारी के बाद देखे गए पृष्ठों की संख्या में 40 फ़ीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। पहले के 10 लाख के मुकाबले यह आंकड़ा अब 14 लाख हो गया है।''

विकिमीडिया फाउंडेशन द्वारा शुरु किया गया हिंदी विकिपीडिया भी धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रहा है। इसे जुलाई 2003 में शुरू किया गया था। इसमें इस समय 26 हजार से ज़्यादा लेख माजूद हैं। विकिपीडिया के जय वाल्श कहते हैं, ''विकिपीडिया दुनिया की 260 भाषाओं में मौजूद है और अब हिंदी विकिपीडिया 52 वें स्थान पर पहुंच गया है। करोड़ों हिंदीभाषियों के मद्देनजर विकिमीडिया का यह अहम मिशन है कि हम इस परियोजना को और आगे बढ़ने में मदद करें।''

इंटरनेट पर हिंदी को लोकप्रिय बनाने के रास्ते में और क्या चुनौतियां सामने हैं? कार्णिक कहते हैं, ''सबसे बड़ी चुनौती इंटरनेट की पहुंच और कंप्यूटरों की कीमत की है। इंटरनेट की पहुंच का दायरा बढ़ने, विशेषकर छोटे कस्बों में, और कंप्यूटरों की कीमत कम होने पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएं इंटरनेट पर तेजी से फलती-फूलती नज़र आएंगीं।'' भारत की एक शोध कंपनी जक्स्टकंसल्ट द्वारा जून 2008 में किए एक सर्वे के मुताबिक भारत में चार करोड़ 90 लाख लोग इंटरनेट का इस्तेमाल

लेकिन क्या हिंदी इंटरनेट पर फलने-फूलने के लिए ज़रूरी पैसा बनाने में सफल है? मिश्र कहते हैं, ''यह मुश्किल सवाल है। फिलहाल इस मोर्चे पर ज़्यादा सफलता नहीं मिल रही है।'' लेकिन रायचौधरी का मानना है कि एकबार हिंदी साइटें लोकप्रियता की एक सीमा को पार कर लें तो कमाई होना भी तय है। वह कहते हैं, ''हम यदि इंटरनेट के अमेरिका में विकास पर गौर करें तो पता चलेगा कि वहां सबसे पहले कंटेंट उन लोगों ने नेट पर डाला जिन्हें पैसा कमाने के बजाय वेब समुदायों के जरिये कंटेंट डालने में ज़्यादा दिलचस्पी थी। इसके बाद लोगों ने गुणवत्ता वाली सामग्री देखी तो लोगों ने उन्हें खोजने के लिए इंटरनेट पर आना शुरू कर दिया। इससे एक ऐसा चक्र शुरू हुआ जिसमें कंटेंट आर्थिक रूप से लाभप्रद सौदा साबित होने लगा। इसके बाद डवलेपर सक्रिय हो गए जो लोगों के इंटरनेट अनुभव को सूचनाओं के भंडार से आगे ले जाकर उसे इंटरएक्टिव अनुभव बनाने में जुट गए। उनके अनुसार, ''भारतीय भाषाएं लंबे समय तक पहले चरण में अटकी रही। हाल ही में उन्होंने दूसरे चरण में प्रवेश किया है।''

हिंदी वेबसाइट फिलहाल ज़्यादा धन नहीं कमा पा रही हैं। लेकिन हजारों हिंदी प्रेमी, अध्यापक, पत्रकार, डॉक्टर, इंजीनियर, आदि इंटरनेट पर आ रहे हैं और अपनी व्यक्तिगत वेबसाइट या ब्लॉगिंग के जरिये अपना योगदान कर रहे हैं। ये लोग किसी कारोबारी मॉडल की चिंता नहीं कर रहे हैं। जिला स्तर के हिंदी अखबार भी खुद को इंटरनेट पर डाल रहे हैं। बहुत से मामलों में हिंदी जानने वाले प्रोफेशनल हिंदी में अच्छी सामग्री इंटरनेट पर प्रकाशित कर रहे हैं। हिंदी पत्रकार तो इंटरनेट के पहले से ही मुरीद हो चुके हैं। इंटरनेट पर वेबसाइट चालू करने के लिए ज़्यादा पैसे की ज़रूरत नहीं होती है, इसलिए आने वाले दिनों में इंटरनेट के गांवों और कस्बों तक पहुंचने पर हिंदी प्रेमी विद्वानों के इंटरनेट पर अपने दिल और दिमाग खोलने की बड़ी उम्मीद है। लेकिन उनमें से शायद बहुत कम को पता होगा कि इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के सम्मुख आने वाली सबसे बड़ी बाधा को दूर करने वाला व्यक्ति जीरॉक्स का एक इंजीनियर जो बेकर था जिसे यूनीकोड का पिता भी कहा जाता है।